शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

समकालीन हिंदी ग़ज़ल में यथार्थ चित्रण

आरती देवी (शोधार्थी)
हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग
जम्मू केंद्रीय विश्वविद्यालय
जम्मू, भारत

शोध संक्षेप

हिन्दी ग़ज़ल का बीजरोपण अमीर खुसरो ने किया। उसके बाद भारतेंदु युग में हिन्दी में ग़ज़ल लिखी गई तथा परवर्ती कवियों पर भी इसका असर देखने को मिला। हिन्दी ग़ज़ल के क्षेत्र में शमशेर बहादुर सिंह का महत्वपूर्ण योगदान है। इनके प्रयोग के कारण ही हिन्दी के पाठक ग़ज़ल की ओर आकर्षित हुए तथा परवर्ती कवियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बने। इन्हीं के प्रभाव के कारण दुष्यंत कुमार ने ग़ज़ल के क्षेत्र में अपना हाथ आज़माया। प्रस्तुत शोध पत्र में समकालीन हिंदी ग़ज़ल में यथार्थ चित्रण पर विचार किया गया है।

भूमिका

सन 1960 के बाद भारत के सामाजिक ढाँचे में रफ्तार से बदलाव आया। जिस कारण गरीबी, भ्रष्टाचार, आर्थिक विषमता, आतंकवाद, मानवीय मूल्यों में बदलाव, अलगाववाद आदि समस्याओं ने जन्म लिया। आज़ादी के बाद खुशहाल तथा स्वस्थ समाज का सपना खण्डित हो गया। दुष्यंत कुमार ने तत्कालीन समाज के भीतर व्याप्त तनाव, विद्रुपताओं, आक्रोश तथा पीड़ा को ग़ज़ल के माध्यम से विद्रोही तेवर में व्यक्त किया। जन आक्रोश के भावों को तीखे तेवर में अपनी कलम द्वारा अभिव्यक्त किया। दुष्यंत कुमार ने हिन्दी ग़ज़ल में जो नवीन प्रयोग किया वह यह कि नरम लहज़े को छोड़कर तीखे तेवर में यथार्थ के धरातल पर सामाजिक विसंगतियों पर प्रहार किया। उनके शे'र इतने लोकप्रिय हुए कि जनता के कंठहार बन गए। हिन्दी ग़ज़ल में यथार्थ का पुट डाल कर दुष्यंत कुमार ने ग़ज़ल से सम्बंधित पुरानी मान्यताओं को खण्डित किया। आज ग़ज़ल आशिक और माशूक के बीच में गुफ्तगूँ मात्र नहीं है, बल्कि वह मानव जीवन की जटिलताओं को अभिव्यक्त करने का माध्यम बनी है। दुष्यंत कुमार जब अपने ग़ज़ल संग्रह 'साये में धूप' का पहला शे'र लिखते हैं तो वह इस प्रकार मोहभंग की स्थिति को प्रस्तुत करते हैं :

कहाँ तो तय था चिरागाँ हरेक घर के लिए
कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।[1]

जनता के साथ हुए छल और टूटे सपनों की हकीकत को वह अपने पहले दो मिसरों में ही व्यक्त कर देते हैं।

दुष्यंत के बाद हिन्दी ग़ज़ल में एक नया मोड़ आया, जिसे विकसित करने में बलवीर सिंह रंग, त्रिलोचन, चंद्रसेन विराट, अदम गोंडवी, गोपालदास नीरज, बकेल उत्साही, हरिकृष्ण प्रेमी, बालस्वरूप राही, डॉ.कुंअर बेचैन, डॉ. शेरजंग गर्ग, ज़हीर कुरेशी, ज्ञानप्रकाश विवेक, रामकुमार कृषक, डॉ.रोहिताश्व अस्थाना, डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल, शिवओम अम्बर, अशोक मिज़ाज, नूर मुहम्मद नूर, सुल्तान अहमद, कमलेश भट्ट

कमल, शिवकुमार पराग, महेश अश्क, मेहश कटारे सुगम, विज्ञान व्रत, डॉ.भावना, माधव कौशिक, वशिष्ठ अनूप, देवेन्द्र आर्य, हरेराम समीप, हस्तीमल हस्ती, रामनाथ बेखबर, कृष्ण कुमार प्रजापति, ज्ञानप्रकाश पांडेय आदि नाम उल्लेखनीय हैं।

समकालीन हिंदी ग़ज़ल में यथार्थ

समाज में बदलती परिस्थितियों ने जहाँ अनेक साधन उपलब्ध करवाए, वहीं दूसरी ओर अनेक समस्याओं का जन्म भी हुआ। समकालीन हिन्दी ग़ज़लकारों ने समाज में हो रही प्रत्येक घटना को अपनी ग़ज़लों में यथार्थ रूप में चित्रित किया है। ग़ज़ल के केन्द में आज हाशिये का समाज है। ग़ज़ल के विषय में ज्ञानप्रकाश पाण्डेय लिखते हैं:

धूप को ठेंगा दिखाकर जिस्म से मज़दूर के
दम-ब-दम चूता हुआ नमकीन पानी है ग़ज़ल
बेहिचक बे.रोब शेब.खौफों खतर दिल खोल के
दुम हिलाऊ दौर में आतिश बयानी है ग़ज़ल।[2]

आज़ादी के बाद तेज़ी से शहरों में कल-कारखानों की स्थापना हुई तथा पैसे कमाने के साधन बदले। पूँजीवादी व्यवस्था के आने से मानवीय मूल्यों तथा आदर्शों में तेज़ी से गिरावट आई। पूँजीवादी सभ्यता का भारत पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा जिस कारण अलगाव, अकेलापन, कुंठा, संत्रास, धोखा, फरेब, अनास्था, अविश्वास जैसी विकृतियों ने मनुष्य को घेर लिया। आज का मनुष्य भीतर की उदासी पर दिखावे की मुस्कान का आवरण ओढ़े है। बदलते परिवेश के यथार्थ को अनिरुद्ध सिन्हा इस प्रकार व्यक्त करते हैं :

जब से रिश्तों ने सियासत की जुबां पाई है
घर की दहलीज पे रोती है मुहब्बत अपनी।[3]

हरीश दरवेश का शे'र है.

कठिन कितना इक इक क्षण हो गया हैए
हमारे हृदय का हरण हो गया है।[4]

बढ़ती बौद्धिकता तथा स्वार्थ के कारण मानवता गौण होती जा रही है। मनुष्य-मनुष्य के बीच प्रेम, स्नेह, सद्भाव, भाईचारे की जगह व्यक्तिगत स्वार्थ हावी हो गया है। दिन-ब-दिन परिस्थितियां कठिन होती जा रही हैं, क्योंकि मानव-मन संवेदनहीन हो रहा है। भविष्य के प्रति चिंता व्यक्त हुए अशोक मिज़ाज का शे'र है :

बदल रहे हैं यहाँ सब रिवाज क्या होगा
मुझे ये फिक्र है कल का समाज क्या होगा।[5]

वर्तमान में जो असंतोषजनक परिस्थितियां मानव जीवन से आई हैं, उनको देखकर ग़ज़लकार भी असमंजस में पड़ गया है, क्योंकि वह भी समाज का ही हिस्सा है। अर्थात् उसे भी इस चीज़ का डर है कि हालात ऐसे ही बने रहे तो न जाने भविष्य में किस प्रकार के समाज का निर्माण हो। व्यक्ति भौतिक आनंद में फंस कर मूल्यहीन, दिशाहीन तथा लक्ष्यहीन जीवन व्यतीत कर रहा है। यही दिशाहीनता मानव सभ्यता के लिए भय का कारण बनी हुई है। आज व्यक्ति किसी न किसी बात से ग्रस्त है जिस कारण वह खुद को अकेला तथा असुरक्षित महसूस कर रहा है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश की उन्नति तथा जनता के कल्याण हेतु योजनाएँ बनायी गयीं, किन्तु देश के भ्रष्ट राजनीतिज्ञों के कारण वह योजनाएं आम आदमी तक पहुँच न सकीं। जिस कारण आम आदमी निराशा तथा असंतोष में घिर गया। समकालीन हिन्दी ग़ज़लकारों ने जनतंत्र की हकीकत, पुलिस तन्त्र की रिश्वतखोरी, नौकरशाही, अफसरशाही, भ्रष्ट नेता, लोकतंत्र की व्यवस्था में आया असुंतलन आदि के कारण पीड़ित जनता के दुःख तथा आक्रोश को ग़ज़ल के माध्यम से उभारा है।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

राजनीति में आई सिद्धांतहीनता के कारण सही तथा गलत का अन्तर मिटता दिखाई दे रहा है। यह तय कर पाना मुश्किल है कि कौन किसके पक्ष में है तथा कौन विपक्ष में। समकालीन हिन्दी ग़ज़लकार राजनीतिज्ञों के आचरण से भलीभांति परिचित हैं कि वे केवल वोट तथा अपने स्वार्थ के लिए राजनीतिक मंच का प्रयेग कर रहे हैं। राजनीति में आए लोभ तथा लोभ के कारण दलबदल प्रवृत्ति ने देश की जनता के भीतर असुरक्षा का भाव उत्पन्न किया है। जनता के खून-पसीने पर ही भ्रष्ट राजनेता ऐशो-आराम के साधन जुटा पा रहे हैं। देश में रामराज्य कल्पना की जाती है परन्तु उसके भीतर के खोखलेपन तथा फरेब का पर्दाफाश करते हुए अदम गोंडवी का शे'र है :

काजू भुने प्लेट में ह्विस्की गिलास में
उतरा है रामराज्य विधायक निवास में।
पक्के समाजवादी है तस्कर हों या डकैत
इतना असर है खादी के उजले लिबास में।[6]

अदम गौडवी ने भ्रष्ट नेताओं को आड़े हाथ लेते हुए उनकी जमकर खबर ली है। अधिकांश नेताओं के आचरण में आए धोखेबाज़ी, मक्कारी तथा फरेब को समकालीन ग़ज़लकारों ने बेबाकी से व्यक्त किया है।

चुनाव में जीतने के लिए धर्म के नाम पर बांटों और राज करो की नीति अपनाई जा रही है। हमारा देश विविधता में एकता के लिए जाना जाता है। अलग-अलग धर्म, जाति, संस्कृति, परंपरा तथा भाषा से संबंध रखने के उपरान्त एक दूसरे प्रति आदर भाव हमें आपस में जोड़े हुए हैं। परन्तु यही विविधता सबसे बड़ी कमज़ोरी भी है, जिसका फायदा नेता उठाते हैं। वह मानव मन के भीतर धर्म, लिंग, जाति, भाषा आदि का भेद बरकरार रख अपना प्रभुत्व बनाए रखना चाहते हैं। इसी घिनोनी सोच पर कटाक्ष करते हुए वशिष्ठ जी के अशआर हैं :

धर्म के नाम पर मूर्खों को लड़ाते रहिये
अपनी कुर्सी के लिए वोट उगाते रहिये।
घर की दीवार को हर रोज़ गिराते रहिये
दिलों बीच में दीवार उठाते रहिये।
रोज़ी रोटी की कोई बात न करने पाये
आप महज़हब का ज़हर सबको पिलाते रहिये।[7]

लोगों को असली मुद्दों से भटकाकर धर्म के नाम पर लड़ाया जाता है जिस कारण देश की एकता खण्डित हो रही है तथा गुंडागर्दी का माहौल जन्म ले रहा है। आज के नेता अवसरवादी तथा व्यक्तित्वविहीन हैं जिस कारण राजनेता का आदर्श रूप खण्डित हो गया है।

विज्ञान की उन्नति के कारण धार्मिक ढकोसलों तथा अंधविश्वास का प्रभाव थोडा कम होता दिखाई दे रहा है। परन्तु अधिकतर आम जनता आज भी तर्क और अंधविश्वास में फर्क नहीं कर पा रही है। इसी कश्मकश का चित्रण ज्ञानप्रकाश पाण्डेय ने इस प्रकार किया है :

जिस तरफ देखो वहीं बाबा खड़े इस देश मेंए
किस तरह विज्ञान का इस दौर में विस्तार हो।[8]

आए दिन हम मीडिया में धर्म के नाम पाखण्ड करने वाले बाबाओं का पर्दाफाश होते दिखाई देता है, परन्तु फिर भी भोलीभाली जनता उनके झूठ में फंस जाती है। धर्म के ठेकेदार धर्म के नाम पर उनके भीतर डर पैदा कर उन्हें वास्तविक तथा यथार्थ से दूर रखते हैं। ऐसी स्थिति विज्ञान के विस्तार में बाधा बनी हुई है। रचनाकार इस बात से वाकिफ़ है कि आम आदमी के सामने सबसे बड़ा प्रश्न उस की रोज़ी रोटी का है। एक गरीब व्यक्ति के लिए धर्म से बड़ा विषय उसकी रोज़ी ही है। ज्ञानप्रकाश पाण्डेय का शे'र है :

काबा मेरे आगे न कलीसा मेरे आगे

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

दो वक्त की रोटी की है चिंता मेरे आगे।[9]

समकालीन ग़ज़लकार धर्म की तुलना में मनुष्य की मूलभूत ज़रूरतों के महत्व को स्वीकार करता है। पितृसत्तात्मक समाज के ढाँचे का निर्माण इस प्रकार किया गया है कि स्त्री कभी भी अपने 'स्व' की कल्पना न कर सके। आज हम नारी सशक्तिकरण की बात करते हैं अर्थात् नारी को उसके वास्तविक रूप से पहचान कराना। विडम्बना यह है कि शिक्षा के प्रचार-प्रसार के कारण नारी अपने प्रति हो रहे अत्याचारों से तो जागरूक हुई परन्तु उसे अनेक नए अत्याचारों का सामना करना पड़ा।

आज अपनी पहचान बनाने के उपरान्त वह खुद को सुरक्षित महसूस नहीं करती है। हर वक्त उसके चारों ओर भय का माहौल रहता है। मर्यादाहीन लोगों के भीतर पाशविक प्रवृत्ति का चित्रण डॉ. भावना ने मार्मिक रूप से किया है :

बालिग नाबालिग सब वहशत की ज़द में
आज हृदय है कितना घायल क्या बोलूँ।[10]

नारी जीवन के संघर्ष को ग़ज़लकार अनूप वशिष्ठ इस प्रकार व्यक्त करते हैं.

सिर पे बोझए पीठ पर बच्चे को बाँधेजारही है
ज़िन्दगी की जंग में वह हर घड़ी टकरा रही है।
भूखए रोटीए भातए बच्चेए मर्द है दुनिया यही
हैकोई मंज़िल नहींए पर जा रही है आ रही है।[11]

त्याग और बलिदान की छवि जो भारतीय महिला के लिए गढ़ी गई है उसके भीतर वह संघर्षमय जीवन व्यतीत कर रही है। आज नारी के भीतर आत्मविश्वास का बीज अंकुरित हो चुका है, जिस कारण वह अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ने से पिछे नहीं हट रही है। वह घर की चारदिवारी से बाहर निकल कर अपनी क्षमता तथा प्रतिभा का लोहा मनवा रही है। उसी आत्मविश्वास तथा साहस का चित्रण मीनाक्षी जिजीविषा ने इस प्रकार किया है.

रोटी कपड़ा बच्चे घर वर से आगे
सोच रही है दीवारो-दर से आगे।
चूल्हा, चौका, झाड़ू, पौछा और बर्तन
देख रही सपना इस मंज़र से आगे।
हिम्मत करके बढ़ आई है अब नारी।
हर कठिनाई के भी अजगर से आगे।[12]

नारी सशक्तिकरण का लक्ष्य बहुत बड़ा है परन्तु उस की पहल से समाज में हलचल जरूर हुई है। आज विवेकी पुरुष भी स्त्री का साथ देने में पीछे नहीं है।

समाज का असली सृजनकर्ता मेहनतकश मजदूर है, जिसके दम पर बड़ी-से-बड़ी आलिशान ईमारतें खड़ी हैं। चाहे मज़दूर हो या किसान दिन-रात अनवरत श्रम करने के उपरान्त श्रमिक वर्ग अभावग्रस्त जीवन व्यतीत कर रहा है। किसान की स्थिति इतनी नारकीय हो गई है कि किसान वर्ग को आत्महत्या जैसी समस्या का सामना करना पड़ रहा है। खेती से उनका जीवनयापन नहीं हो रहा तथा वह महंगाई और कर्ज़ में दबा चला जाता है। सरकार द्वारा अनेक योजनाएं बनाई जाती हैं, लेकिन उनका कार्यान्वयन उस स्तर पर नहीं होता है। आज समाज के सामने यह समस्या खड़ी हो गयी है कि वह अपने अन्नदाता को किस प्रकार बचाए रखे। डॉ. भावना का शे'र है :

तेज़ बारिश में बुझ गया चूल्हा
अब तवे पे है अधपकी रोटी।[13]

कमलेश भट्ट कमल का शे'र है :

फसलों की आस में ही बाये थे बीज लेकिन
उग गई खुदकुशी भी चुपचाप खेतियों में।[14]

हरी-भरी फसल की उम्मीद में किसान अपनी जान लगा देता है, परन्तु निराशा हाथ लगने पर

वह आत्महत्या जैसा विकल्प चुनने में विवश हो जाता है।

आज युवा पीढ़ी के सामने जो ज्वलंत समस्या है, वह बेरोज़गारी है। वह प्रतिभा सम्पन्न होते हुए भी दर-दर भटकने को विवश है। उसे योग्यतानुसार नौकरी नहीं मिल रही है जिस कारण वह डिप्रेशन का शिकार हो रहा है। युवा वर्ग के साथ खिलवाड़ कर उसे कोरे देश प्रेम और देश सेवा के भाषण दिए जाते हैं। रोटी की समस्या तथा देश प्रेम के बीच जूझ रही युवा पीढ़ी का द्वन्द रचनाकार ने निम्न शे'र में लिपिबद्ध किया है :

उन्हें तुम प्रेम करना देश से कैसे सिखलाओगे
जो भूखे पेट, खाली हाथ है चढ़ती जवानी में।[15]

कमलेश भट्ट कमल का शे'र है :

युवा पीढ़ी जिसे लिखनी थी खुद निर्माण की गाथा
उसी के भाग्य में इस दौर ने बरबादियाँ लिख दीं।[16]

अवसरों के पक्षपातपूर्ण विवतरण के कारण देश की आर्थिक स्थिति तथा भविष्य की नीवं कमज़ोर हो रही है। सम्पूर्ण विश्व 2019 से करोना जैसी महामारी का सामना कर रहा है। इसके कारण जीवन का हर क्षेत्र प्रभावित हुआ। न केवल शारीरिक रूप से बल्कि यह दौर मानसिक स्तर पर भी संकट का रहा। इसके कारण मानव का जीवन एकदम पटरी से उतर गया। उसे उन परिस्थियितों में रहना पड़ा जिनकी उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी। इस काल के दर्द को ग़ज़लकार अनिरुद्ध सिन्हा इस प्रकार बयाँ करते हैं :

आज कशमकश में पड़ी ज़िंदगी है
विवश घर में रहने को हर आदमी है।[17]

स्वतंत्र रूप से विचरण करने वाली मनुष्य जाति के लिए यह संकटकाल है कि उसके जीवन की सीमा घर की ही चारदीवारी में ही सिमट कर रह गयी है। चारों ओर फैली निराशा से लड़ने के लिए साहस ही एकमात्र साधन है। इसलिए ग़ज़लकार चारों ओर फैली महामारी से लड़ने के लिए हौसला बनाए रखने की सलाह देते हुए लिखता है :

कोरोना को रोना क्यों
पल-पल आँख भिगोना क्यों।
हिम्मत से लो काम ज़रा
बेबस धीरज खोना क्यों।[18]

समकालीन ग़ज़लकार उस समाज की कल्पना तथा उम्मीद कर रहे हैं, जो न्याय तथा समानता के आधार पर खड़ा हो। वर्तमान स्थिति यह है कि समाज पर भूख, गरीबी, बेरोज़गारी, छल, लूट, अन्याय, अत्याचार जैसे अराजक तत्वों का प्रभाव है। समकालीन ग़ज़लकारों के भीतर की सकारात्मक ऊर्जा के कारण ही उसके भीतर नए स्वस्थ समाज की गहरी आस्था विद्यमान है। दुष्यंत कुमार इसी आस्था और उम्मीद की लौ थामे हुए निराश मानव मन की भीतर उर्जा का संचार करते हुए लिखते हैं :

इस नदी की धार में ठण्डी हवा आती तो है
नाव जर्जर ही सहीए लहरों से टकराती तो है।
एक चादर साँस ने सारे नगर पर डाल दी
यह अंधेरे की सड़क इस ओर तक जाती तो है।[19]

नाव जर्जर होने पर भी लहरों से टकराने का साहस उस टूटे मानव मन की स्थिति का चित्रण है जो विपरीत परिस्थितियों का सामना करने पर भी निराश नहीं हो रहा, बल्कि निरंतर उन परिस्थितियों का डटकर सामना कर रहा है। अंधेरे की सड़क का भोर तक जाना उस आशा तथा उम्मीद का प्रतीक है जो जीने के लिए

प्रेरित करता है। संघर्ष तथा आशा द्वारा ही सृजनात्मक बदलाव की कल्पना की जा सकती है।

निष्कर्ष

समकालीन ग़ज़लकारों की विशेषता यह है कि उन्होंने यथार्थ के धरातल पर समाज का चित्रण किया है साथ ही लोकजीवन से जुड़े बिम्बोंए प्रतीकोंए मुहावरों तथा उपमानों को काव्यात्मक अभिव्यकित में प्रयोग कर ग़ज़ल में सुबोधता तथा प्रभावोत्पादकता लाने का कार्य किया।

संदर्भ ग्रन्थ

1 दुष्यंत कुमारए साये में धूप पृष्ठ 15
2 ज्ञानप्रकाश पाण्डेय, सर्द मौसम की ख़लिश, पृष्ठ 80
3 अनिरूद्ध सिन्हा, ताकि हम बचे रहें, पृष्ठ 21
4 सं. डॉ. विनय कुमार शुक्ल, आरती देवी, ग़ज़ल त्रयोदश, पृष्ठ 57
5 सं. डॉ. विनय कुमार शुक्ल, आरती देवी, ग़ज़ल त्रयोदश, पृष्ठ 33
6 अदम गोंडवी, समय से मुठभेड़ पृष्ठ 70
7 वशिष्ठ अनूप, बंजारे नयन, पृष्ठ 65
8 ज्ञान प्रकाश पाण्डेय, सर्द मौसम की खलिश, पृष्ठ 55
9 ज्ञान प्रकाश पाण्डेय, सर्द मौसम की खलिश, पृष्ठ 44
10 सं. डॉ. विनय कुंमार शुक्ल आरती देवी, ग़ज़ल त्रयोदश, पृष्ठ 65
11 वशिष्ठ अनूप, तेरी आँखें बहुत बोलती हैं पृष्ठ 33
12 हरेराम समीप, समकालीन महिला ग़ज़लकार, पृष्ठ 144
13 सं. डॉ. विनय कुमार शुक्ल, आरती देवी, ग़ज़ल त्रयोदश, पृष्ठ 67
14 कमलेश भट्ट कमल, शिखरों के सोपान, पृष्ठ 27
15 वशिष्ठ अनूप मशालें फिर जलाने का समय है, पृष्ठ 75
16 कमलेश भट्ट कमल, शिखरों के सोपान, पृष्ठ 21
17 सं. डॉ. विनय कुमार शुक्ल, आरती देवी, ग़ज़ल त्रयोदश, पृष्ठ 36
18 रमेश कँवल, 2020 की नुमाइन्दा ग़ज़लें, पृष्ठ 168
19 दुष्यंत कुमार साये में धूप पृष्ठ 16